शिक्षा के वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्य
INDIVIDUAL AND SOCIAL AIMS OF EDUCATION

शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य (Individual Aim of Education)

वैयक्तिक उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Individual Aim) :—

शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य एक प्राचीन उद्देश्य है। इस उद्देश्य के समर्थक समाज की अपेक्षा व्यक्ति को बड़ा मानते हैं। उनका विश्वास है कि व्यक्तियों के बिना समाज कोरी कल्पना है। व्यक्तियों ने ही मिलकर अपने हितों की रक्षा करने के लिए समाज की रचना की है तथा समय-समय पर संस्कृति, सभ्यता एवं विज्ञान के क्षेत्रों में भी अपना-अपना योगदान दिया है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति के विकास से ही समाज का विकास हुआ तथा दिन-प्रतिदिन हो रहा है। अतः शिक्षा को व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं तथा विशेषताओं का विकास करना चाहिए।

प्राचीनकाल में ग्रीस, भारत तथा अन्य पाश्चात्य देशों में भी शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य को प्रमुख स्थान दिया जाता था। मध्य काल में अवश्य सामूहिक शिक्षा के ढंग को अपनाया गया जिसके कारण व्यक्तित्व के विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। परन्तु वर्तमान युग में जब से मनोविज्ञान को शिक्षा के वैयक्तिक क्षेत्र में स्थान मिला तब से रूसो, पेस्टॉलाजी, फ्रोबिल तथा नन आदि शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य पर फिर से बल देना आरम्भ कर दिया।

Scanned with CamScanner

वैयक्तिक उद्देश्य वस्तुतः शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास करने में प्रवृत्त करना चाहता है। प्रजातंत्रात्मक राज्य व्यक्ति के इस सर्वतोमुखी विकास पर अधिक बल देता है। इसलिए आजकल अधिकतर देशों में बच्चों की शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर दी गई है। रॉस के अनुसार "सामाजिक संस्थाओं का अस्तित्व ही केवल व्यक्ति के जीवन को अधिक अच्छा, अधिक पूर्ण, अधिक बड़ी, अधिक प्रसन्न, अधिक सुरक्षित तथा अधिक लाभदायक बनाने के लिए है।

6

शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के रूप — शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के दो रूप हैं।

1) आत्माभिव्यक्ति (Self-expression)

2) आत्मानुभूति (Self-realization)

1. आत्माभिव्यक्ति (Self-expression) — इसे वैयक्तिक उद्देश्य के संकुचित अर्थ में लिया जाता है। इसमें बालक की शक्तियों का सर्वांगीण विकास तथा प्राकृतिक विकास होता है। इस अर्थ में यह उद्देश्य प्रकृतिवादी दर्शन पर आधारित है। इसके प्रतिपादकों का विश्वास है कि समाज की अपेक्षा व्यक्ति बड़ा है। अतः उनकी धारणा है कि परिवार, समाज, राज्य तथा स्कूलों को बालक की व्यक्तिगत शक्तियों को विकसित करने के लिए ही स्थापित किया गया है।

प्रकृतिवादी दार्शनिक रूसो ने लिखा है — "प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट स्वभाव को लेकर जन्म लेता है। हम बिना सोचे-समझे भिन्न-भिन्न रुचियों वाले बालकों को एक ही प्रकार के कार्यों में जुटा देते हैं। ऐसी शिक्षा उनकी विशेषताओं को नष्ट करके एक निर्जीव समानता की छाप लगा देती है।" उसने यह भी बताया कि बालक का प्राकृतिक विकास उसी समय हो सकता है जब उसकी शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था उसकी रुचियों, रुझानों तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर की जायेगी।

Scanned with CamScanner

को ध्यान में रखकर की जायेगी। ऐसी दशा में सामूहिक शिक्षण (Collective Teaching) तथा निश्चित पाठ्यक्रम (fixed Curriculum) का बहिष्कार करके वैयक्तिक शिक्षा (Individualised Instruction) तथा लचीले पाठ्यक्रम (Flexible Curriculum) का निर्माण करके समस्त शिक्षण-पद्धतियों (Methods of Teaching) को क्रिया के सिद्धान्तों (Activity Methods) पर आधारित करना चाहिए।

टी० पी० नन ने भी वैयक्तिक उद्देश्य का समर्थन करते हुए अपनी पुस्तक Education; Its Data and the First Principles में व्यक्ति की व्यक्तिगत शक्तियों के विकास पर विशेष बल देते हुए लिखा है- "मानव जगत में यदि कुछ भी अच्छाई आ सकती है तो वह व्यक्तिगत पुरुषों तथा स्त्रियों के स्वतंत्र प्रयासों के द्वारा ही आ सकती है। अतः शिक्षा का संगठन इस सत्य के आधार पर ही होना चाहिए।" यदि बालक की रुचियों तथा मूल प्रवृत्तियों की अवहेलना करके उस पर सामाजिक नियमों को बल-पूर्वक थोपा जायेगा तो उसका विशेष व्यक्तित्व कुण्ठित हो जायेगा।

इस प्रकार संकुचित अर्थ में शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य का आशय आत्माभिव्यक्ति (Self-expression) अथवा प्राकृतिक विकास (Natural Development) है।

Scanned with CamScanner

आत्माभिव्यक्ति : अपने-आप को व्यक्त करना। आत्म-प्रकाशन पर विशेष बल देना।
आत्माभिव्यक्ति में 'स्व' (Self) का अभिप्राय है - 'जैसा मैं उसे जानता हूँ' (Self as I Know it.)
आत्माभिव्यक्ति में स्व (Self) व्यक्ति का मूर्त स्व (Concrete Self) है।

(7)

आत्मानुभूति - अन्दर (अपने आप में महसूस करना या कल्पना करना,
या आत्म-बोध) आत्मानुभूति के उद्देश्य में समाज और सामाजिक वातावरण के महत्व को स्वीकार किया गया है।
आत्मानुभूति में 'स्व' का अभिप्राय है - 'जैसा मैं उसको होना चाहता हूँ' (Self as I would have it to be)

2. <u>आत्मानुभूति</u> (Self-realigation) :- इसे वैयक्तिक उद्देश्य का व्यापक अर्थ के रूप में लिया जाता है। मनोविज्ञान भी व्यक्तित्व के विकास के व्यापक अर्थ का समर्थन करता है। आधुनिक मनोविज्ञान प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक बालक एक-दूसरे से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक दृष्टि से भिन्न होता है। यह भिन्नता रुचियों, शक्तियों, विचारों तथा कार्य करने की क्षमता में भी होती है। यही नहीं, प्रत्येक बालक की सामान्य बुद्धि, जीवन के आदर्श तथा कार्य करने की गति में भी अन्तर होता है। किसी बालक की बुद्धि मन्द होती है, तो किसी की प्रखर। ऐसे ही एक बालक शारीरिक कार्य करने में रुचि लेता है तो दूसरा मानसिक कार्य को करना अधिक पसन्द करता है। **बुद्धि तथा योग्यताओं** के इन भेदों को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक बालक के लिए एकसा कठोर पाठ्यक्रम बनाकर सबको एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना **अमनोवैज्ञानिक** है।